



Original Article

आखरी छलांग उपन्यास तथा पीपली लाइव फिल्म में चित्रित किसान समस्याएँ: एक तुलनात्मक अध्ययन

अनिल आबा गुरव

शोधार्थी

लोकनेते रामशेठ ठाकुर पब्लिक स्कूल, कामोठे

Manuscript ID:

IJAAR-C130333

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 165 - 168

Submitted: 24 Jan.2026

Revised: 01 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

अनिल आबा गुरव

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785847

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785847>



Creative Commons



सार:

भारत कृषिप्रधान देश है और इस भारत देश का किसान लंबे समय से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संकटों से जूझ रहा है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था होने के बावजूद किसान की स्थिति निरंतर कमजोर होती गई है। साहित्य और सिनेमा ने इस विडंबना को बार-बार उजागर करने किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में आखरी छलांग उपन्यास तथा पीपली लाइव फिल्म के माध्यम से किसान समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। उपन्यास जहाँ किसान के आंतरिक संघर्ष, आत्मसम्मान और व्यवस्था से टकराव को गहन संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता है, वहीं फिल्म व्यंग्यात्मक शैली में किसान आत्महत्या, मीडिया और राजनीति की असंवेदनशील भूमिका को उजागर करती है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि किसान समस्या केवल आर्थिक न होकर सामाजिक, प्रशासनिक और नैतिक संकट भी है।

मुख्य शब्द: किसान समस्या, आत्महत्या, ऋणग्रस्तता, मीडिया, राजनीति, ग्रामीण यथार्थ, हिंदी साहित्य, तथा सिनेमा।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

अनिल आबा गुरव. (2026). आखरी छलांग उपन्यास तथा पीपली लाइव फिल्म में चित्रित किसान समस्याएँ: एक तुलनात्मक अध्ययन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 165 - 168. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785847>

प्रस्तावना:

पूरे विश्व में अपने भारत की पहचान एक कृषि प्रधान देश के रूप में की जाती रही है। यहाँ की विशाल जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर है। इसके बावजूद देश के किसान आज सबसे अधिक उपेक्षित वर्गों में शामिल है।

स्वतंत्रता के पश्चात कृषि सुधारों, हरित क्रांति और तकनीकी विकास के बावजूद किसान की मूल समस्याएँ समाप्त नहीं हुईं। भूमि का विखंडन, प्राकृतिक आपदाएँ, सिंचाई की कमी, महंगे बीज-खाद, कर्ज/ऋण, बाजार की अनिश्चितता और सरकारी



नीतियों की विफलता ने किसान जीवन को संकटग्रस्त बना दिया।

हिंदी साहित्य ने किसान जीवन को संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत किया है। वहीं सिनेमा ने दृश्यात्मक माध्यम से इस पीड़ा को व्यापक समाज तक पहुँचाया है। आखरी छलांग और पीपली लाइव दोनों ही रचनाएँ २१ वी सदी के किसान संकट को केंद्र में रखती हैं, किंतु उनकी अभिव्यक्ति शैली और दृष्टिकोण भिन्न हैं।

शोध का उद्देश्य:

1. आखरी छलांग उपन्यास में चित्रित किसान समस्याओं का विश्लेषण करना।
2. पीपली लाइव फिल्म में किसान आत्महत्या, मीडिया और राजनीति की भूमिका का अध्ययन करना।
3. दोनों कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट करना कि साहित्य और सिनेमा किसान यथार्थ को किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं।
4. समकालीन संदर्भ में इन कृतियों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति:

- प्रस्तुत शोध गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है।
- प्राथमिक स्रोत : आखरी छलांग उपन्यास और पीपली लाइव फिल्म
- द्वितीयक स्रोत : किसान समस्याओं पर आधारित आलोचनात्मक लेख, शोध-पत्र, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ
- पद्धति : तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक

पूर्ववर्ती साहित्य की समीक्षा:

हिंदी साहित्य में किसान जीवन का सर्वाधिक प्रभावशाली चित्रण 20 वी शताब्दी के महान साहित्यिक मुन्शी प्रेमचंदजी द्वारा लिखित 'गोदान' में मिलता है, जहाँ होरी का जीवन भारतीय किसान की नियति का प्रतीक बन जाता है। इसके बाद फणीश्वर नाथ रेणू द्वारा लिखित 'मैलाआँचल' में ग्रामीण जीवन की संरचना, राजनीति और सामाजिक संघर्ष का यथार्थ सामने आता है।

समकालीन साहित्य में उदारीकरण के बाद किसान संकट और गहराया है। शोधकर्ताओं ने माना है कि बाजारवाद और कॉर्पोरेट कृषि नीतियाँ छोटे किसानों के लिए घातक सिद्ध हुई हैं।

भारतीय सिनेमा में किसान विषयक फिल्मों में 'दो बीघा ज़मीन' यथार्थवादी परंपरा की आधारशिला मानी जाती है, जबकि 'पीपली लाइव' ने व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से किसान आत्महत्या और मीडिया की भूमिका पर राष्ट्रीय बहस को जन्म दिया।

उपन्यास आखरी छलांग में किसान समस्याएँ:

1. किसान जीवन की पृष्ठभूमि: आखरी छलांग एक ऐसे किसान वर्ग को प्रस्तुत करता है जो निरंतर संकटों से जूझ रहा है। उपन्यास का किसान परंपरागत मूल्यों से जुड़ा है, किंतु आधुनिक व्यवस्था उसे हाशिए पर धकेल देती है।
2. भूमि और अस्तित्व का संकट: उपन्यास में भूमि किसान के लिए जीवन का आधार है। भूमि छिन जाने का अर्थ केवल आर्थिक नुकसान नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान का नष्ट होना है। सरकारी योजनाएँ और भूमि अधिग्रहण किसान को असुरक्षित बना देते हैं।



3. ऋणग्रस्तता और आर्थिक दबाव: किसान कर्ज लेने को विवश है। साहूकार, बैंक और सहकारी समितियाँ किसान को कर्ज के जाल में जकड़ लेती हैं। ब्याज और दंड उसे मानसिक रूप से तोड़ देते हैं।
4. प्रशासनिक शोषण: उपन्यास में नौकरशाही की जटिलता किसान के लिए अभिशाप बन जाती है। फाइलें, प्रमाणपत्र और नियम किसान की समझ से बाहर होते हैं।
5. मानसिक तनाव और 'आखरी छलांग': लगातार अपमान, असहायता और विफलता किसान को आत्मघाती विचारों की ओर धकेलती है 'आखरी छलांग'।

फिल्म पीपली लाइव में किसान समस्याएँ:

1. किसान आत्महत्या का प्रश्न: फिल्म का केंद्रीय विषय किसान आत्महत्या है। सरकारी मुआवजा नीति किसान को जीवन से अधिक मृत्यु का मूल्य सिखाती है।
2. मीडिया की भूमिका: मीडिया किसान की पीड़ा को सनसनी में बदल देता है। समाचार चैनलों की प्रतिस्पर्धा मानव संवेदना को समाप्त कर देती है।
3. राजनीति और अवसरवाद: राजनीतिक दल किसान को वोट बैंक के रूप में देखते हैं। सहायता और घोषणाएँ केवल भाषणों तक सीमित रहती हैं।
4. ग्रामीण-शहरी विभाजन। फिल्म शहरी मीडिया और ग्रामीण यथार्थ के बीच की दूरी को उजागर करती है। शहर में बैठा समाज किसान की वास्तविक समस्या से अनभिज्ञ रहता है। किसान की उस मानसिक स्थिति का प्रतीक है, जहाँ उसके पास कोई विकल्प नहीं बचता।

तुलनात्मक अध्ययन:

बिंदु	आखरी छलांग	पीपली लाइव
माध्यम	उपन्यास	फिल्म
शैली	गंभीर, संवेदनशील	व्यंग्यात्मक
मुख्य समस्या	किसान का मानसिक व आर्थिक संकट	आत्महत्या, मीडिया व राजनीति
प्रस्तुति	आंतरिक पीड़ा पर केंद्रित	बाहरी व्यवस्था की आलोचना

उपन्यास किसान के अंतर्मन को उद्घाटित करता है, जबकि फिल्म व्यवस्था की अमानवीयता को उजागर करती है।

समकालीन प्रासंगिकता:

आज भी किसान आत्महत्या, आंदोलन, कर्जमाफी और न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसे मुद्दे उतने ही प्रासंगिक हैं। दोनों कृतियाँ वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में भी अपनी सार्थकता बनाए रखती हैं।

निष्कर्ष:

'आखरी छलांग' उपन्यास और 'पीपली लाइव' फिल्म दोनों ही भारतीय किसान जीवन की त्रासदी को अलग-अलग माध्यमों से प्रस्तुत करती हैं। उपन्यास किसान की आंतरिक टूटन और संघर्ष को संवेदनशील ढंग से दिखाता है, जबकि फिल्म व्यंग्य के माध्यम से मीडिया और राजनीति की संवेदनहीनता को उजागर करती है। दोनों रचनाएँ मिलकर यह स्पष्ट करती हैं कि किसान संकट केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक, मानसिक और नैतिक संकट भी है। जब तक किसान को सम्मान, सुरक्षा और न्याय नहीं मिलेगा, तब तक भारतीय लोकतंत्र अधूरा रहेगा।



संदर्भ सूची:

1. शिवमूर्ति. आखरी छलांग. (प्रकाशन विवरण)2008।
2. पीपली लाइव. निर्देशन – अनुषा रिज़वी, निर्माण –
आमिर खान, 2010।
3. प्रेमचंद. गोदान. नई दिल्ली : (प्रकाशक)।
4. रेणु, फणीश्वरनाथ. मैला आँचल. (प्रकाशक)।
5. किसान आत्महत्या एवं कृषि संकट पर प्रकाशित
समकालीन शोध-पत्र एवं समाचार आलेख।